उपधारी, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र
दिगंत - भाग-2 गद्य भाग
शीर्षक - उसने कहा था
लेखक - चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

प्रश्न:- पाठ में लहना सिंह और सूबेदारनी के संवादों को एकत्र करें।

उत्तर:- 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी में लहना सिंह और सूबेदारनी के बीच हुए संवादों को कहानीकार ने रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। लहना सिंह सात दिन की छुट्टी लेकर घर आया हुआ था। सूबेदार के आग्रह पर वह लौटते समय वह सूबेदार के यहाँ होते हुए आया। सूबेदार की पत्नी ने उसे पहचान लिया। सत्ताइस साल पहले बारह वर्ष की आयु में लहना सिंह की भेंट एक आठ वर्ष की बालिका (अब सूबेदार की पत्नी) से अपने मामा के यहाँ भेंट हुई थी। आज वह सूबेदार की पत्नी है।

उसी समय सूबेदार की पत्नी कहती है - "मैंने तेरे को पहचान लिया। एक काम कहती हूँ। मेरे तो भाग फूट गए। एक बेटा है। फौज में भरती हुए उसे एक ही वर्ष हुआ। अब दोनों जाते हैं, मेरे भाग। तुम्हें याद है एक दिन टाँगेवाले का घोड़ा दही वाले के दुकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाए थे। आप घोड़े की लातों में चले गये थे और मुझे उठाकर दुकान के तख्ते पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।" "सूबेदारनी तथा लहना सिंह दोनों की आँखों में आँसू आ गये।" लहना सिंह ने उसकी मौन स्वीकृति आँसुओं में ही दे दी तथा अपने प्राणों की बलि देकर अपने प्रण का पालन किया।

डॉ० देव चरण प्रसाद
[redacted]
एसो० प्रो० हिन्दी 30-04-21
रा० उ० सं० महावि० सुरवसेना, पूर्णियाँ

में सम्मिलित हो गये। इसके साथ ही कॉंग्रेस से उनका नाता टूट गया। परन्तु उन्होंने अपने संस्मरणात्मक निबंध में यह लिखा है कि गाँधीजी को जब इसकी जानकारी हुई तो वे हँस पड़े। उन्होंने कहा कि रामनन्दन मेरा है। वह कहीं अन्यत्र जाने वाला नहीं है। यह जानकर मिश्र जी को गाँधी जी के प्रति और अधिक श्रद्धा हो गयी।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी [redacted] 30-04-21
रा०ऊ०सं०महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'निबंधमाला'

शीर्षक - 'गाँधी जी और मैं'

लेखक - पंडित रामनंदन मिश्र

प्रश्न:- लेखक को साबरमती आश्रम क्यों अच्छा लगता था। वे कब सोशलिस्ट पार्टी में शामिल हुए। इसका मुख्य कारण क्या था।

उत्तर:- पंडित रामनन्दन मिश्र ने अपने संस्मरणात्मक निबंध में गाँधी जी के साथ व्यतीत किए गये पलों का विस्तार से वर्णन किया है। लेखक श्री मिश्र जी को साबरमती का निवास बहुत अच्छा लगता था। इस आश्रम में आकर्षण के कार्यक्रमके अतिरिक्त यहाँ मिश्र जी के लिए दूसरे आकर्षण आचार्य कृपलानी जी थे और तीसरी सारा भाई की पुत्री मृदुला सारा भाई थी। मृदुला जी युथ लीग का संचालन करती थीं।

साबरमती आश्रम में नियमानुसार, सबको एक घंटा श्रम करना पड़ता था। इस समय गाँधी जी स्वयं तरकारियाँ काटते थे। रामनन्दन जी को हंडा माँजने का काम मिलता था। एक बार रामनन्दन जी गाँधी जी के साथ भोजन कर रहे थे। सब्जी उबाली हुई थी। गाँधी जी ने पूछा कि रामनन्दन जी को सब्जी कैसी लग रही है। रामनन्दन जी ने जवाब दिया: सब्जी तो मैं खींच के साथ खा लेता हूँ। परन्तु बापू जी मुझको एक शिकायत करनी है। गाँधी जी ने कहा कि अवश्य कहिए। पंडित मिश्र जी कहते हैं कि यहाँ तो मुझसे चार जनों का काम लेते हैं पर घी मात्र एक चम्मच देते हैं। गाँधी जी हँस पड़े। उन्होंने आदेश दिया कि कल से रामनन्दन जी चार चम्मच घी दिया जाए।

1930 ई० और 1932 ई० में जब सत्याग्रह-आन्दोलन ~~समाप्त~~ विफल हो गया तो पंडित-रामनन्दन मिश्र जी नवगठित सोशलिस्ट पार्टी

शेष आगे-

Page No.:
Date: / /

कोई परवाह नहीं करता है। परन्तु जब उस अंग में जब कोई वेदना उत्पन्न हो जाती है, तभी उसे ठेस और धक्के से बचाने का प्रयास किया जाता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
[redacted]
30-04-21
रा० कृ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम खण्ड
'निर्मला' उपन्यास
लेखक - मुंशी प्रेमचन्द
शब्दभाषा हिन्दी, अ०द्वि० - पत्र

महत्वपूर्ण अवतरणों की व्याख्या -

" मातृ-प्रेम में कठोरता होती थी, लेकिन मृदुलता से मिली हुई। इस प्रेम में करुणा थी, पर वह कठोरता न थी, जो आत्मीयता का गुप्त सन्देश देती है। स्वस्थ अंग की परवाह कौन करता है? लेकिन वह अंग जब किसी वेदना से टपकने लगता है, तो उसे ठेस और धक्के से बचाने का यत्न किया जाता है"

उत्तर:-

सन्दर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'निर्मला' उपन्यास से ली गई है। इसके लेखक हिन्दी उपन्यास के सम्राट मुंशी प्रेमचन्द जी हैं। ननद रुक्मिणी और निर्मला के झगड़ों से घर की शान्ति भंग हो जाती है। सियाराम के प्रति रुक्मिणी के उलाहनों को सुनकर मुंशी तोताराम उसकी बुरी तरह पिटाई कर देते हैं। निर्मला से यह नहीं देखा जाता है। वह सियाराम को गोद में लेकर अपने घर में आ जाती है और उसे चुप कराने लगती है। इसी सन्दर्भ में लेखक मातृ-प्रेम और आत्मीयता के अन्तर को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

रुक्मिणी की शिकायत पर मुंशी तोताराम सियाराम की बुरी तरह पिटाई कर देता है। निर्मला बच्चे के रोने से विकल हो जाती है और उसे गोद में उठाकर अपने कमरे में ले आती है। सियाराम सिसक-सिसक कर रो रहा था। निर्मला की गोद में उसे वात्सल्य न मिलकर दया मात्र मिल रही थी। वह उस दया को भिक्षा मात्र समझ रहा था। परन्तु माँ में मृदुलता कठोरता के साथ मिली होती है। निर्मला सियाराम को लेकर जो पुचकार रही थी, उसमें सियाराम की करुणा और आत्मीयता का संदेश मिल रहा था। उसमें माँ के वात्सल्य की कठोरता नहीं थी। जैसे जब शरीर का अंग स्वस्थ रहता है, तब उसकी

शेष आगे—